707

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-10
(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-24 HL-2410

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक* : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10, 23 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	2	5	9	1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नँदनंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत, सोवत, सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जक री।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई ककरी।।
सोई व्याधि हमैं लै आए देखी सुनी न करी।
यह तो सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश कृष्णभक्तिधारा के चितेरे कवि सूरदास के भ्रमरगीतसार से लिया गया है।

प्रसंग - गोपियों द्वारा सगुण कृष्ण के विषय में निर्गुण उद्धव से कहा जा रहा है।

व्याख्या - गोपिया कहती है, हे उद्धव हमारे कृष्ण तो हारिल पक्षी की लकड़ी के समान है। जैसे - हारिल पक्षी कभी उस लकड़ी को नहीं छोड़ता है वैसे ही हमने भी मन-वचन-कर्म से श्रीकृष्ण को पकड़ कर रखा है। हम जागते, सोते और सपने में भी कृष्ण को याद करते रहते है। और यह

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वियोग हमें कड़वी ककड़ी (खीरा) के समान लगता है। ऊपर से तुम हमें निर्गुण ब्रह्म की उपासना का ज्ञान देने आये हैं इसकी हमें कोई आवश्यकता नहीं है, हमारा मन तो श्रीकृष्ण की उपासना में लगा हुआ है इस ज्ञान की उन्हें आवश्यकता है जिनका मन चंचल चकरी के समान घूमता है)

काव्य सौन्दर्य

1) सूरदास ने गोपियों द्वारा निर्गुण ब्रह्म के स्थान पर सगुण ईश्वर के महत्व को उजागर किया है।

3) गोपियों द्वारा उलाहना का भाव

शिल्प सौन्दर्य

1) ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग
२) उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार
3) बिम्बात्मकता

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत दोहा हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के महान रीतिसिद्ध कवि बिहारी के बिहारी सतसई से लिया गया है।

प्रसंग - नायक-नायिका के संयोग के बीच आंगिक चेष्टाओं का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - बिहारी नायक-नायिका के बीच प्रेम का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस काम-क्रीडा में अंगों की चंचलता, उत्तेजना की अधिकता, हंसी-मजाक, सीत्कार, मर्दन और छीना-झपटी ~~जैसे~~ भाव न हो, वह व्यर्थ है। और जिसमें यह भाव हो, वो काम क्रीडा मुक्ति के समान है। इसके अतिरिक्त यदि कोई

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यदि भुक्ति है तो वह व्यर्थ है और हानिकारक है।

भाव सौन्दर्य

(1) रीतिकालीन मानसिकता जैसे श्रृंगार के संयोग पक्ष का वर्णन

(2) दरबारी माहौल के अनुसार

(3) ~~नायक~~ नायिका के आंगिक क्रीडायों का सुंदर वर्णन

शिल्प सौन्दर्य

(1) ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग

(2) बिम्बयोजना की सुंदरता

(3) अनुप्रास अलंकार, अंत वर्ण से उदा० – चमक, तमक

(4) दोहा छंद

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश सूफीकाव्यधारा के महान सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत से लिया गया है।

प्रसंग- नागमती के विरह का वर्णन बारहमासा रूढ़ि के अंतर्गत फाग माह में किया गया है।

व्याख्या - नागमती का विरह, फागुन माह में चलनेवाली हवाओं से चौगुना हो गया है अतः असहनीय है। मेरा शरीर पीले पत्ते के समान हो गया है अतः पवन प्रवाह से वह झड़ जायेगा। वृक्षों के पत्ते झड़ते जा रहे हैं और फल-फूल वाली

शाखाएँ अब पत्तों से रहित हो गयी हैं। अब नई कलियों द्वारा वन फिर से हुलसित होने लगे हैं परन्तु मेरे लिये अभी भी यह संसार कष्टदायक ही है। सब चाँचर जोड़कर फाग मना रहे हैं और मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे अंदर किसी ने आग लगा दी हो यदि प्रिय को ऐसा अच्छा लगता है तो मुझे कोई रोष नहीं है। रात-दिन मैं तुमसे मिलने की इच्छा रखती हूँ। अतः मेरे शरीर को जलाकर राख को उस पथ पर फेंक दो जहाँ मेरे प्रिय पाँव रखेंगे।

विशेष

1) नागमती विरह वर्णन अद्वितीय है।
2) बारहमासा काव्यरूढ़ि का प्रयोग
3) ठेठ अवधी भाषा
4) प्रतीकों-बिम्बों का सुंदर प्रयोग।
5) चौपाई के बाद दोहा का प्रयोग

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की राम की शक्तिपूजा कविता से ली गई है।

प्रसंग- इसमें श्रीराम का शारीरिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- निराला कहते हैं श्रीराम के चरण मक्खन जैसे कोमल हैं जो आगे हैं और उनकी वानर सेना उनका अनुसरण कर रही है। वातावरण में स्तब्धता और निराशा छाई है। राम की धनुष की प्रत्यंचा ढीली हो गयी है और कटिबन्ध अस्त-व्यस्त हो गया है। राम की जटाएं खुल गयी हैं और मुकुट भी अस्थिर हो गया है। उनकी जटाएं खुलकर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उनके वक्ष, बाहु-भुजा मे फैल गयी है। ऐसा लगता है मानो पर्वत से अंधकार उतर रहा हो कहीं दूर तारायों से प्रकाश हो रहा हो।

काव्य सौन्दर्य

(1) निराला द्वारा राम की शक्तिपूजा मे राम को सामान्य व्यक्ति के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

(2) निराला ने स्वयं अपने जीवन के निराशा कालको राम की कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

शिल्प सौन्दर्य

(1) भाषा- सीधी सरल प्रवाहमयी तत्समी शब्दो की अधिकता
उदा० - नवनीत, तूणीर

(2) प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता

(3) उपमा अलंकार

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के प्रयोगवादी कविता के महान प्रयोगशील कवि हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की कविता असाध्य वीणा से ली गई है।

प्रसंग- वीणा को बजाने के क्रम में सभी के असफल होने पर प्रियम्वद से अपेक्षा का काल का प्रस्तुतीकरण

व्याख्या- अज्ञेय कहते हैं कि सभी महान कलाकारों की आज विद्या-बुद्धि निरर्थक सिद्ध हो गई है। सभी इस वीणा को बजाने में असफल हो चुके हैं। अभी तक कोई भी ज्ञानी इसे बजा नहीं पाया है। परन्तु मेरा विश्वास अभी भी कम नहीं हुआ है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मुझे पता है कृच्छ की तपस्या व्यर्थ नहीं जायेगी। वीणा से स्वर अवश्य निकलेंगे जब इसे एक योग्य कलाकार अपने सर्जन शक्ति से अपने हाथों में लेगा तब इससे अवश्य ध्वनि सर्जित होगी।

भाव सौन्दर्य

(1) अज्ञेय द्वारा टी.एस. इलियट के दर्शन का प्रयोग जिसमें वैयक्तिकता और सर्जनात्मकता पर बल

(2) व्यक्ति के मन के सर्जन शक्ति पर बल

कला सौन्दर्य

(1) भाषा - सरल - सुबोध
तत्समी शब्द जैसे - कलावंत, विश्वास

(2) बिम्बात्मकता

(3) प्रतीकात्मकता

(4) उपमा अलंकार

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह खाली बैठे का काम-सा दिखायी पड़ता है।' इस मत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कविता को रीतिवादी मनोरंजन से मुक्त कर सामाजिक दायित्व से युक्त करना चाहते थे। क्या मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृति 'भारत-भारती' द्विवेदीजी की इस मंशा को पूरी करती है? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'सूर के पास उपमाओं का अक्षय कोष है। वे उपमाओं का संसार रचकर कथा की छोटी और क्षीण-सी जमीन को गहरी बनाते चले जाते हैं।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

3. (क) पदमावत में लोकसंस्कृति और लोकतत्त्वों के प्रति जायसी की गहरी रुचि व्यक्त होती दिखायी देती है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पद्मावत, सूफीकाव्यधारा के महान कवि मलिक मुहम्मद जायसी की महान रचना है। जिसमें उन्होंने हिन्दू संस्कृति की लोकप्रचलित कथा को आधार बनाकर, महाकाव्य की रचना की है।

पद्मावत में लोकसंस्कृति और लोकतत्वों के प्रति जायसी की गहरी रुचि के प्रमाण

(1) जायसी द्वारा लोककथा को महाकाव्य का आधार बनाया गया है।
उदाहरण - पद्मावत में हीरामन तोते और पद्मिनी रानी की कहानी

(2) जायसी द्वारा ठेठ अवधी भाषा का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रयोग लोकतत्व का समाहित करते है।

उदाहरण नैन चुवहि जैसे महवट नीरू

महवट- अवध क्षेत्र में लोक संस्कृति के अनुसार माघ महीने की वर्षा को महवट कहा जाता है.

दवंगरा शब्द का प्रयोग

वर्षा के मौसम में पहली बरसात के बाद जमीन की दरारो को भरने वाली वर्षा को दवंगरा कहा जाता है.

(3) अवध क्षेत्र की उत्सव प्रधान संस्कृति का सुन्दर वर्णन पद्मावत में किया गया है।

उदाहरण- होली, दीवाली का त्यौहार
- विवाह उत्सव का सुन्दर वर्णन
- लोकनृत्यों जैसे - धमार, झूमक
- लोक संस्कृति के पकवानो का वर्णन

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(4) पारिवारिक संबंधो की उपस्थिति लोकतत्व को शामिल करता है।

उदाहरण - नागमती का पति वियोग, स्त्री-पुरूष संबंध का दर्शाता

- नागमती की प्रतिबद्धता और एकनिष्ठता

(5) सिंहलद्वीप के लोकजीवन का सुंदर वर्णन है।

उदाहरण - पद्मावति की सखियों द्वारा पानी भरने जाने का वर्णन

पानि भरै आवहिं पनिहारी। सुंदर सुरूप पद्मिनी नारी

(6) सिंहलद्वीप के हाट-बाजार, वेश्या की गली का वर्णन लोकजीवन के निकट ले जाता है।

केत खिलार तेहि हारी पासा। हाथ झारि उठे निराशा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(7) हिन्दू देवी-देवताओं का भी पद्मावत में शामिल किया गया है।
उदा० गणेश, शिव, पार्वती, हनुमान

(8) लोकसाहित्य का समायोजन -
पद्मावत में पद्मावति की तुलना रामचरितमानस की सीता से की गई है।

अतः इस प्रकार पद्मावत में जायसी लोक संस्कृति और लोकतत्व का सूक्ष्म चित्रण किया है। इसलिये इनकी समन्वयक्षमता के कारण इनका स्थान अद्वितीय है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) सूरदास के 'भ्रमरगीत' के काव्यरूप का निर्धारण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कृष्णभक्ति काव्यधारा के महान कवि सूरदास द्वारा भ्रमरगीत सार की रचना उनके जीवन की महान उपलब्धि थी। इनसे पहले भी कई भ्रमरगीत लिखे गये परन्तु सूरदास का भ्रमरगीत एक अद्वितीय स्थान ग्रहण करता है।

सूरदास पहले वात्सल्य और दास्य भक्ति करते थे परन्तु वल्लभाचार्य से मिलने के बाद उन्होंने श्रृंगार रस पर आधारित भक्ति प्रारंभ की।

"सूर ह्वै कै काहे घिघियात हो"

अतः कृष्ण भक्तों में सूरदास का स्थान अद्वितीय है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भ्रमरगीत का काव्यरूप

सूरदास ने भ्रमरगीत में जिन पंक्तियों को रचा है इसे न तो प्रबंधात्मकता की श्रेणी में रखा जा सकता और न ही मुक्तक काव्यरूप कहा जा सकता है।

इसलिये सूरदास स्वयं ने ही अपने पदों को लीलापद का नाम दिया है।

''सूर सगुन लीलापद गावै''

अतः इससे यह सिद्ध होता है कि जिनमें सूरदास ने कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन किया है उन पदों

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को उन्होंने स्वयं लीलापद कहा है।

ऊधौ कोकिल कूजत कानन
तुम हमको उपदेस करत हो,
भस्म लगावन आनन।

साथ ही सूरदास द्वारा अपने काव्य मे उपालम्भ काव्यरूप का प्रयोग किया गया है जिसमे गोपियों द्वारा उद्धव को उलाहना दी गई है। सम्पूर्ण भ्रमरगीत इसी उपालम्भ काव्यरूप पर आधारित है।

आयो घोष बड़ौ व्यापारी
कौं है जनक जननी को कहिये,
कौं दासी कौं नारी।

अतः सूरदास ने कृष्णभक्ति की राह मे नए प्रतिमान गढ़े जो उन्हे अद्वितीय स्थान पर स्थापित करते है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) क्या गोस्वामी तुलसीदास लोकनायकत्व की कसौटी पर खरे उतरते हैं? सुचिंतित और सारगर्भित उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

महान प्रगतिवादी विचारधारा के नाटककार डॉ. रामविलास शर्मा ने अपने निबंध तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य में गोस्वामी तुलसीदास को लोकनायक के रूप में स्थापित किया गया है।

गोस्वामी तुलसीदास के लोकनायकत्व की कसौटी पर खरे उतरने के

कारण

(1) तुलसीदास द्वारा कवितावली के उत्तरकाण्ड में कई सामाजिक-आर्थिक समस्याओं ~~जैसे~~- गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, ऋण पर आवाज उठायी गई है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

" खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी "

(२) साथ ही तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस में शबरी और निषाद की कथाओं को अधिक महत्व दिया गया साथ ही शंबूक वध जैसे प्रसंग को हटा दिया गया है।

अतः जाति व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है।

धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ जुलाहा कहौ।
काहू की बेटी से बेटा न ब्याहौं, काहू की जाति बिगार न सोऊ

(३) तुलसीदास द्वारा नारी विषय पर भी नजर डाली गयी और नारी के दुःख पर ध्यान
कत नारि सृजि बिचारी, सपनेहुँ सुख नाही

(4) साथ ही पारिवारिक मूल्यों की स्थापना पर जोर दिया गया।

कौसल्यादि सासु गृह माही। सेवहिं सबन्हि माद मद नहीं

(5) राम भक्ति के साथ अन्य देवी देवताओं की भक्ति

है शिवद्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहि सपनेहुँ नहीं भावा।

(6) तुलसीदास द्वारा धर्म की परिभाषा

परहित सरिस धर्म नहीं भाई
परपीड़ा सम नहिं अधमाई

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि तुलसी ने समाज सभी वर्गों के प्रति संवेदना व्यक्त की है इसलिये इन्हे गरीबनवाज की संज्ञा दी जाती है।

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर के विषय मे हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर पुस्तक मे लिखा है-

कबीर वाणी से कवि, स्वभाव से उपदेशक, जन्म से संत, परन्तु वास्तव मे भक्त है।

अतः कबीर का बहुआयामी व्यक्तित्व था इन्होने समाज मे व्याप्त भेदभाव, धार्मिक अंधविश्वासो के विरुद्ध आवाज उठायी साथ ही योग और भक्ति का समन्वय किया।

कबीर के काव्य की प्रासंगिकता

(1) कबीर के काव्य में समाजसुधार के विचार, वर्तमान में समतामूलक समाज की स्थापना मे सहायक है।

पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूं पहार
तेते तो चाकी भली, जो पीस खाये संसार

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर ने धार्मिक साम्प्रदायिकता को कम करने के प्रयास किये और हिन्दू और मुस्लिम दोनों के धार्मिक आडम्बरों पर चोट की।

काकर पाथर जोड़ि के, मस्जिद लियो बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।

(2) कबीर ने सही मार्गदर्शक के रूप में गुरु की महिमा को स्थापित किया है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारि गुरु आपने, जो गोविंद दियो बताय

(3) कबीर ने बौद्ध और जैन धर्म के मूल्यों जैसे- अहिंसा, सत्य को भी अपने काव्य में शामिल किया है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बकरी पाती खात है ताकि काढ़ि खाल,
जे नर बकरी खात है तिनका कौन हवाल

(4) कबीर ने माया के नकारात्मक रूप पर आक्षेप किया है और इसे लक्ष्य से दिग्भ्रमित करने वाली बताया है।

माया महाठगिनी हम जानी
सिर पर हाथ लिये कर बोले, मधुरीबानी

(5) कबीर द्वारा धार्मिक सामजंस्य स्थापित करने का संदेश दिया गया है।

हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना
आपस में दोऊ लड़ते, मरम कोइ नहीं जाना

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(6) कबीर द्वारा प्रेम तत्व को सर्वोच्चतम स्थान दिया गया है।

पोथि पढ़ि पढ़ि जुग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।

(7) कबीर द्वारा निरन्तर प्रयास करने पर बल दिया गया है जो वर्तमान में भी आवश्यक है।

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरि आवत जात ते शील पर परत निशान

अतः कबीर के काव्य वर्तमान समाज को एक नई दिशा देते है और होने वाले संघर्ष को कम करने सहायक सिद्ध होते है।

(ख) "मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।' विवेचन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मुक्तिबोध की ब्रह्मराक्षस

कविता मुख्यत: मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष की कविता है।

जिसमें उनके द्वारा बुद्धिसम्पन्न ब्रह्मराक्षस द्वारा अपने ज्ञान को सौंपने हेतु योग्य शिष्य की खोज में असमर्थता व्यक्त है।

(1) साथ ही आत्मचेतस से विश्वचेतस बनने का संघर्ष भी मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी के आंतरिक द्वंद्व को उद्घाटित करता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया
मरे पक्षी सा
विदा ही हो गया

- मध्यवर्गीय व्यक्ति भी इस प्रकार समाज से दूरी बनाकर रखता है और सदैव असंतोष और बेचैन रहता है।

मन्नू भण्डारी के महाभोज उपन्यास में भी बुद्धिजीवी वर्ग के आत्मसंघर्ष का वर्णन है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार मुक्तिबोध के स्वयं के जीवन में भी यही आत्मसंघर्ष दिखता है। जो उनकी चाँद का मुँह टेढ़ा है कविता संग्रह में प्रस्तुत है।

(ग) जिंदगी का अभाव और संघर्ष ही नागार्जुन के काव्य-संसार की जलवायु है और विक्षोभ उनकी कविता का केंद्रीय स्वर।' इस कथन के आलोक में नागार्जुन के काव्य-कर्म पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नागार्जुन को हिन्दी साहित्य में जन कवि की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि उन्होंने मूलतः अपनी कविता में समाज के वंचित वर्ग और प्रकृति को शामिल किया है।

नागार्जुन का काव्य कर्म

(1) नागार्जुन की अकाल कविता जिंदगी का अभाव और संघर्ष का सजीव चित्रण करती है।

" कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों कानी कुतिया बैठकी उसके पास"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

साथ ही ~~●~~ अनाज के कुछ दिनों ~~को~~ के आने के बाद परिवार की खुशी का वर्णन, मार्क्सवादी विचारधारा का अतिक्रमण करता है।

दाने आये घर के अंदर कई दिनों के बाद
कौआ ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

(५) इसके ~~साथ ही~~ ~~●~~ नागार्जुन की हरिजन गाथा कविता, 1967 के बेलछी काण्ड पर आधारित है जिसमें निर्दोष दलित वर्ग के लोगों को उच्च वर्ग के द्वारा आग में जिंदा झोंक दिया गया था।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ऐसा तो कभी नहीं हुआ था
एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं
तेरह के तेरह अभागे
अनुपुत्र
झोंक दिये गये हो जिंदा
आग में।

इसके बाद संघर्ष और दलित चेतना हेतु एक बच्चे के जन्म को कृष्ण को अवतार बताते हैं।

श्याम सलोना यह अछूत शिशु
हम सबका उद्धार करेगा।

इस प्रकार नागार्जुन का काव्य जिंदगी के अभाव और संघर्ष का काव्य है।

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत गंधाश हिन्दी साहित्य के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद के गोदान उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग यह उपन्यास के अंत मे मेहता और मालती के बीच प्रेम के आध्यात्मिक रूप को निरूपित करता है।

व्याख्या - मालती, मेहता से कहती है कि हमें मित्र बनकर रहना चाहिये। मुझे पता है तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, मेरी रक्षा हेतु हमेशा तत्पर हो और मैं भी तुम्हें अपना रक्षक मानती हूं। मुझे भी तुमसे प्रेम है, मेरे अंदर त्याग

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

की भावना है। और मेरी ईश्वर से यही कामना है कि मेरी तुम्हारी प्रति श्रद्धा बनी रही। मालती प्रेम को आध्यात्मिक स्तर पर स्थापित कर लेती है और किसी विवाह बंधन में न बंधकर, स्वतंत्र-स्वच्छंद प्रेम पर विश्वास करती है। अत: वह प्रेम को स्वतंत्र चेतना पर अनुभव करती है।

विशेष

1) प्रेमचंद पर मार्क्सवाद का प्रभाव स्पष्ट जो विवाह को बंधन मानकर, लिव-इन-रिलेशनशिप जैसे विचारों को स्वीकरता है।

2) प्रेम की आध्यात्मिक स्तर पर स्थापना

3) सरल-सहज भाषा

3) दर्शन का प्रक्षेपण

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी, विवाह से भिन्न रिश्तों का विकास।

(ख) जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान क्रान्तिवादी उपन्यासकार यशपाल के दिव्या उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग- यह दिव्या द्वारा पृथुसेन से वार्तालाप का दृश्य है।

व्याख्या- दिव्या पृथुसेन से कहती है कि तुमसे जो डरते हैं तुम उनसे डरते हो जो शक्तिशाली होता है उसका डर दिखाई नहीं देता जबकि कमजोर का स्पष्ट होता है। भय का कारण होने से भय यदि तीव्र होता है। जो इन कारणों से मुक्त है वह भयरहित है। यदि तुम्हारी शक्ति से कोई भयभीत है तो वही तुम्हारे लिये

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भय का कारण बनेगा। अनुकूल परिस्थिति पाकर भय कभी भी उत्पन्न हो सकता है। ऐसी स्थिति में शक्ति से डर खत्म नहीं होगा अपितु और बढ़ेगा ही। शक्ति से ही भय का माहौल उत्पन्न होता है।

विशेष

(1) यशपाल द्वारा मार्क्सवादी दर्शन का प्रयोग किया है।

(2) शक्ति से ही भय का जन्म होता है।

(3) समतामूलक समाज की स्थापना पर जोर

प्रासंगिकता - यदि आज भी समाज में सभी वर्गों के पास समान अधिकार होंगे तो अपराध कम होंगे।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा ज़ा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश नई कहानी आंदोलन की राजेन्द्र यादव के एक कृतियां समानांतर कहानी संग्रह की परिंदे कहानी से ली गई है जिसके लेखक निर्मल वर्मा है

प्रसंग- मिस लतिका द्वारा अपने अकेलेपन और विचारों का प्रस्तुतीकरण।

व्याख्या- मिस लतिका कहती है मेरे मरने के बाद मेरी चिंता करने वाला कोई भी संबंधी नहीं है यह बात मुझे बेचैन करती रहती है। कुछ लोगों की मौत अंत तक पहेली बनकर रह जाती है क्योंकि शायद उन्हें जिंदगी से ज्यादा उम्मीदें थी जो वास्तविकता में नहीं बदल पायी। इस मौत को त्रासदी भी नहीं कहा जा सकता

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

क्योंकि मरने वाले को आखिरी दम तक मरने का अहसास नहीं होता है क्योंकि उसके लिये दुःखी होने वाला कोई नहीं होता है। ऐसी मौत बहुत शांति से हो जाती है।

विशेष

(1) निर्मल वर्मा द्वारा अस्तित्ववादी दर्शन का प्रयोग किया गया है।

(2) शहरी अकेलेपन, अजनबीपन का सुंदर चित्रण

(3) एकालाप और आत्मालाप शैली

(4) सरल-सहज भाषा

प्रासंगिकता- वर्तमान में भी शहरी वर्ग पहचान के संकट, से अकेलेपन से जूझ रहा है।

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) प्रच्छन्नता का उद्घाटन कवि-कर्म का एक मुख्य अंग है। ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी त्यों-त्यों कवियों के लिये यह काम बढ़ता जाएगा। मनुष्य के हृदय की वृत्तियों से सीधा संबंध रखने वाले रूपों और व्यापारों को प्रत्यक्ष करने के लिये उसे बहुत से पदों से हटाना पड़ेगा। इससे यह स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों हमारी वृत्तियों पर सभ्यता के नए-नए आवरण चढ़ते जाएंगे त्यों-त्यों एक ओर तो कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी, दूसरी ओर कविकर्म कठिन होता जाएगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के कविता क्या है निबंध से लिया गया है।

प्रसंग - शुक्ल जी द्वारा कविता और समाज के बीच संबंध को उद्घाटित किया गया है।

व्याख्या - शुक्ल जी कहते हैं कविता रचना करने वाले द्वारा समाज से प्रच्छन्नता का पर्दा हटाना, मुख्य कार्य होना है। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता कवियों को कई समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। मनुष्य के हृदय से सीधा संबंध स्थापित करने हेतु कई आवरणों को हटाना होगा।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अतः जैसे-जैसे हमारी सभ्यता का समय के साथ विकास होता जायेगा वैसे-वैसे कई आवरण चढ़ते जायेंगे ऐसी स्थिति मे कविता ही इन्हे हटा कर मनुष्य को भावनायुक्त बनाएगी और कवियों को अधिक कविताओं की रचना करनी होगी।

विशेष

(1) शुक्ल जी द्वारा विचारप्रधान निबंध के रूप कविता पर निबंध लिखा गया है।

(2) कविता के महत्व पर जोर

(3) भाषा सरल-सहज

कहीं-कहीं-तत्सभी शब्दों का प्रयोग

तद० प्रच्छन्नता, कविकर्म

प्रासंगिकता - वर्तमान के तकनीकी युग मे व्यक्ति को संवेदनशील बनाने मे कविता की आवश्यकता बनी हुई है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) राजनीति साहित्य नहीं हैं। उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ, तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान अस्तित्ववादी नाटककार मोहन राकेश के आषाढ़ का एक दिन उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग - यह वाक्य नाटक के नायक कालिदास द्वारा मल्लिका से कहा गया है नाटक के अंत का समय।

व्याख्या - कालिदास, मल्लिका से कहता है राजनीति, साहित्य के समान आत्मनिष्ठ नही है। राजनीति एक जटिल विषय है जिसमें एक-एक क्षण का महत्व होता है। यदि एक पल के लिये लापरवाही की गई तो बहुत बड़ी हानि झेलनी पड़ती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

(1) मोहन राकेश द्वारा इस नाटक में मुख्यतः सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन को आधार बनाया गया है।

(2) राजनीति को एक जटिल विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

(3) राजनीति और साहित्य की तुलना

(4) राकेश द्वारा परिवेश अनुकूल भाषा का प्रयोग
तत्समी शब्द - राजनीति, एवं

(5) स्वगत कथन

(6) तुलनात्मक शैली

प्रासंगिकता - वर्तमान काल में भी साहित्य एक आत्मनिष्ठ विषय है वहीं राजनीति एक वस्तुनिष्ठ विषय है।

6. (क) 'प्रेमचंद के कथा-साहित्य में उनका वर्तमान भी बोलता हुआ दिखायी देता है और भविष्य भी।' इस कथन के संदर्भ में अपना तार्किक मत रखिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद द्वारा सन 1936 में रचित

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) गोदान के मेहता-मालती संवाद से उभरने वाली वैचारिकता की प्रस्तुति कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'महाभोज' में समकालीन दलगत राजनीति का जन-विरोधी चरित्र विश्वसनीय तरीके से उभारा गया है- इस कथन का परीक्षण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

7. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' के आधार पर मोहन राकेश की रंग-दृष्टि पर विचार करें। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन' उपन्यास रंगमंच की दृष्टि से एक सफल नाटक है।

मोहन राकेश ने हिन्दी नाटक रंगमंच की दुनिया मे एक मौलिक रंगमंच की स्थापना की थी

रंगमंचीयता की विशेषता

① आषाढ़ का एक दिन नाटक मे 3 अंक है परन्तु केवल 1 ही दृश्य है जो दृश्य बदलने की कठिनाई को कम करते है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(२) मंच में प्रयोग होने वाले संसाधनों का अत्यंत सामान्य और साधारण होना।

उदा० आषाढ़ का एक दिन में - दो दीपक, दो चादर, एक चौकी और कुछ बर्तन की आवश्यकता पड़ती है।

(7) मोहन राकेश के नाटकों के रंगमंचन में अत्यन्त कम समय लगता है जो दर्शकों के लिये सुविधाजनक होता है।

(?) संवाद योजना और भाषा शैली का कथानक के अनुसार होना

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) मोहन राकेश द्वारा जिन रंग संकेतों का प्रयोग किया गया है वह नाटक को मौलिक बनाता है।

उदा०· घोड़े की टापों की आवाज
बादल का गरजना
आषाढ़ की वर्षा

(घ) मोहन राकेश द्वारा नाटक में आकस्मिकता का अद्भुत प्रयोग किया गया है।

उदा० विलोम, तभी उपस्थित होता है जब कालिदास और मल्लिका साथ होते हैं।

- मल्लिका की बच्ची को रोना उस समय जब कालिदास मल्लिका को नई प्रस्ताव देता है।

शरूयातका

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(6) मोहन राकेश के नाटकों न गीत है और न ही कोई नृत्य। भारत दुर्दशा मे गीतों की भरमार नाटक को कमजोर बनाते है।

(7) मोहन राकेश के नाटकों में पात्रों की संख्या उचित अनुपात मे है।

मोहन राकेश की इसी रंगमंच दृष्टि के कारण उनके आधे-अधूरे, लहरों के राजहंस और आषाढ़ का एक दिन. रंगमंचन हेतु सफल नाटक सिद्ध हुए।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) दलित-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का अनुशीलन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद द्वारा वर्ष 1936 में अपनी रचना जीवन के अंतिम दिनों में किया गया था। प्रेमचंद द्वारा 1936 में ही प्रगतिवादी लेखक संघ की अध्यक्षता की गई थी अतः गोदान में भी इसका प्रभाव दिखाई देता है।

प्रेमचंद का गोदान उपन्यास एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है जिसमें प्रेमचंद ने तात्कालिक समाज की सम्पूर्ण समस्याओं जैसे- जातिगत भेदभाव, सामंतवाद, बेमेल विवाह, दहेज समस्या, किसानों का शोषण, ग्रामीणता आदि सभी का यथार्थवादी चित्रण किया है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गोदान में प्रेमचंद का दलित विमर्श

प्रेमचंद में प्राय: चाक्षेप लगाया जाता है कि प्रेमचंद ने दलित वर्ग के प्रति नकारात्मक दृष्टि अपनायी है परन्तु सीलिया-मातादीन प्रसंग, सीलिया के परिवार की अधिकार चेतना जैसे प्रसंगों में यह निहित होता है कि प्रेमचंद ने इस समय समाज के अनुसार दलित वर्ग की स्थिति का चित्रण किया है।

1) परिवार द्वारा सामाजीकरण के कारण - रूपा योंटे सोना के द्वारा दलितों के प्रति सोच उस समय की सामाजिक व्यवस्था का परिणाम है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रूपा - ए राम, सोना चमार, ए राम सोना चमार

(५) धार्मिक रूप से उच्च ब्राह्मण वर्ण द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ मानना

दातादीन - नीच जात, जहाँ पेट भर रोटी खाई यों टेढ़े चले।

नीच जात लतियाए अच्छा।

परन्तु वहीं दूसरी ओर उनके द्वारा कई प्रसंगों में दलित वर्ग के प्रति संवेदना प्रकट की गई है।

उदा॰- सिलिया और मातादीन के विषय में मातादीन द्वारा अपने पिता दातादीन के विरुद्ध जाकर सिलिया से विवाह करना।

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण का उद्घाटन करते हुए बताइये कि क्या यह यशपाल के नारी-संबंधी दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करता है? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यशपाल द्वारा रचित उपन्यास दिव्या, नारी संबंधी सभी समस्यायों को समग्रता से उकेरता है।

यशपाल मुख्यत: मार्क्सवाद से प्रभावित रचनाकार है उन्हें अपने उपन्यास दिव्या मे मार्क्सवाद का स्थूल के स्थान पर मारिश के माध्यम से सूक्ष्म प्रक्षेपण किया है, जिससे उनकी नारी संबंधी विचार मुख्यत: मारिश के माध्यम से उपन्यास मे उपस्थित है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मारिश के नारी संबंधी दृष्टिकोण :
यशपाल के नारी संबंधी दृष्टिकोण के प्रतिनिधि है।

कारण

1) मारिश नारी के शारीरिक बनावट का आकर्षण का घटक मानता है जिससे पुरुष आकर्षित होकर जीवन को आगे बढ़ाने में इसका सहायक और समरूप बनता है।

२) मारिश नारी को बौद्ध धर्म के त्याज्य मानने का विरोधी है वह नारी को पुरुष के समान मानता है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

७) मारिशा, रूद्रधीर के नारी को कुलमाता, कुलवधू, कुल कन्या जैसे पदों का पराधीनता के पद मानता है। वह घोषणा करता है नारी एक स्वतंत्र व्यक्ति है।

८) मारिश, प्रेस्थ और प्रुतूल के नारी को भोग की वस्तु मानने के विरुद्ध है वह नारी को समाज में समान अधिकार दिलाने के पक्ष में है।

इस प्रकार, यशपाल ने अपने नारी विषयक विचारों को मारिश के माध्यम से उद्घाटित किया है।

8. (क) गुलाबराय के निबंध 'भारतीय संस्कृति' के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे किन्तु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Space for Rough Work